Vol 7 Issue 3 Dec 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017

''साहित्य में आदिवासी समाज : एक दस्तावेज''

डॉ. आभा खेडेकर
भाषा–विभाग (हिन्दी) , श्रीमती ल.रा.तो. वाणिज्य महाविद्यालय, अकोला.

प्रस्तावना :

आज आदिवासियों में चेतना जगी है। वह नई–नई विचारधाराओं और क्रान्तियों से परिचित हुआ है, जिनके परिप्रेक्ष्य में वह अपनी नई पुरानी स्थितियों को तोलने लगा है। उसमें अपने होने न होने, अपने हकों के अस्तित्व की वर्तमान स्थिति, अपने साथ हुए भेदभाव व अन्याय का भी बोध जगा है और यही बोध उसके साहित्य में झलक रहा है। यह आदिवासी समाज आज अपनी संस्कृति, भाषा व उदात्त जीवन–शैली की अभिव्यक्ति से हिन्दी को समृध्द कर रहा है। यह साहित्य प्रासंगिक तो है ही, अपेक्षित जमातों के प्रति आज तक अनजाने में अथवा जानबूझकर अपने स्वार्थहित में बरती जा रही उपेक्षा के प्रति मुख्यधारा में संवेदना पैदाकर मानसिकता बदलने का प्रयास भी करता है। यह साहित्य 'हम और वे' की दूरियों को पाटने का काम कर रहा है।

आदिवासी साहित्य की आवश्यकता :–

संसार भर में लिखा गया है कि इनके ग्रंथ की प्राप्ति दूर्लभ है। आदिवासी से तात्पर्य प्राचीनकाल में दंडकारण्य का भाग जहॉं ये लोग रहते थे व हैं। यहॉं जीने के लिए हैं। आदिवासियों की विवाह संस्था, जीवन–पध्दति, संस्कृति, रीति–रिवाज आदि सन्तुलित एवं प्रासंगिक है, केवल व्यवसाय उत्पादन–पध्दति तथा वस्तु निनिमयता जैसी महत्वपुर्ण बातों में स्थिरता न रहने के कारण आदिवासी अविकसित रहे। इन अविकसित समूहों में विकसित – संस्कृति का अभाव है, इन समूहों के संगीत, कला, मौखिक साहित्य आदि सृजनशीलता की श्रेणी में नहीं माने गए उसे स्वीकारा ही नहीं गया। प्राचीन सुरों के ब्योरे की जॉंच करते समय उसे लोक–साहित्य माना गया। उपनिवेशवाद के संक्रमण से ही ज्योतिबा फूले, बाबासाहेब आंबेडकर, बिरसा मुंडा जैसे महत्वपूर्ण विचारक पैदा होने के कारण इन अविकसित समूहों के हितार्थ साहित्य रचा जाने लगा और समूहों की प्रगति का मार्ग मानव की मुक्ति का मार्ग बन गया। दलित–आदिवासियों के अनगिनत आन्दोलनों से अनेक सृजनशील लेखक एवं विचारक पैदा हुए। दलित लेखकों ने जो लिखा उसे दलित साहित्य का नाम दिया व यह भी कहा जाने लगा कि साहित्य की कोई जाति नही होती। दलित–साहित्य की परिभाषा जितनी पुष्ट, गम्भीर और साहसिक भी उतनी ही वह जातिः परक भी थी। दलित लेखकों ने आदिवासी, विमुक्त, धुमक्कड तथा विद्रोह, वेदना का साहित्य लिखते हुए आत्ममंथन उच्चवर्गीय, रसिकों के लिए लिखा जा रहा था। धीरे–धीरे आदिवासी लेखकों ने आदिवासी भावनाओं को साहित्य में समावेश किया।

आदिवासी साहित्य :–

आदिवासी लेखन की उभरती चेतना का सबसे सटीक और सही चित्रण हमें वाहरू सोनवणे की 'स्टेज' नाम की कविता में मिलता है –

हम स्टेज पर गए ही नहीं
जो हमारे नाम पर बनाई गई थी
हमें बुलाया भी नहीं गया
उंगली के इशारे से
हमारी जगह हमें दिखा दी गई
हम वहीं बैठ गए
हमें खूब शाबासी मिली
और 'वे' स्टेज पर खडे होकर
हमारा दुख हमें ही बताते रहे
हमारा दुख अपना ही रहा
जो कभी उनका हुआ नहीं।

इस कविता में आदिवासीयों का लेखन फूटा है वह इस लेखन में उभरती चेतना को परिभाषित किया है। इसमें सदियों से चुप्पी तोडकर चेतना को जागृत करना है। अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपना इतिहास, अपना भूगोल आदि को बाह्य जगत से रूबरू कराना चाहा है। मिथकों में, प्रतीकों में, साहित्य में कलम द्वारा विकृत छवि को उजागर किया गया है। इसी चेतना के साथ अपने लोक–साहित्य की समृध्द परंपरा को रखकर समकालीन साहित्य की शुरूआत की। कई हजारवर्षों का विशद इतिहास उनके पास हैं। लोकगीतों, लोक कथाओं, वीर गाथाओं, पर्वो–त्योहारों के गीतों, परम्परा है उनके पास व पृथ्वी का इतिहास भी छिपा है। आदिवासी लेखन जीवन का लेखन है, कल्पना और मनोरंजन का नहीं। इनकी कलम बिरसा के उलगुलान, झारखंड के जंगलों व संपाल कोल विद्रोह पर लगातार चल रही है। इनकी इसी चेतना ने इन्हें मुक्ति का अहसास, अपनी ताकत का अहसास दिलाया। महाराष्ट्र के कवि भुजंग मेश्राम लिखते हैं –

बिरसा तुम्हें कहीं से भी आना होगा।
घास कटाती दरोंती हो या लकडी काटती टॉगी।
यहॉ–वहॉ, पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण से।
खेतों की बयार बन कर।
कहीं से भी आ मेरे बिरसा
लोग तरी बाट जोहते।

इस चेतना ने उन्हें दिया मुक्ति का अहसास, अपनी ताकत का अहसास, जो उनकी मुट्ठी में बंद है। इसी चेतना ने उनमें इतना आत्मविश्वास भर दिया कि कवि महादेव टोप्पो कहते हैं–

''वह धनुष उठाएगा और
जंगल के हरेवन की खातिर जंगल का कवि
मॉदर बनाएगा – बॉसुरी बजाएगा
चढाकर प्रत्यांचा पर कलम।''

आदिवासी जब बोलता नहीं था, तो अन्याय का विरोध तीर चलाकर करना था। अबवह कलम की मारक शक्ति को तीर की तरह प्रयोग कर रहा है। इस क्षेत्र में स्त्रियॉ भी पीछे नहीं रही हैं। वह पूरी आदिवासी स्त्री –जातिका आव्हान करती है संताली कवयित्री निर्मला पुतुल भी स्त्रियों को बदलने में आतुर है। वह अपने

समाज की विकृतियों से भी टकराती है। निर्मला पुतुल अपने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, परंपराओं पर तीव्र चोट करती हैं, पर्वोत्तर, मध्यभारत अथवा पश्चिम व दक्षिण भारत अथवा उसके इर्द-गिर्द के व्दीप सभी जगह आदिवासी पहचान का आन्दोलन जन्म ले चुका है। निर्मला पुतुल के साथ ही साथ मयामनी, वासवी, बिटिया मुई, रोज केरकट्टा आदि कलम चला रही है। आदिवासी लेखक लोकसाहित्य में किंवदन्तियों, कथाऐं, लोककथाएँ सामने ला रहे हैं। नाटक भी लिख रहे है और अपनी शौर्यगाथाओं की खोज भी कर रहे हैं। आदिवासी लेखकों ने संपादन के क्षेत्र में भी कमान संभाल ली है। मातृभाषाओं में अनेक पत्र-पत्रिकाऐं विविध राज्यों से निकलती है व हिन्दी भाषी आदिवासी लेखकों की भी पत्रिकाऐं निकलती है जो इनल लेखकों का प्रतिनिधित्व करती है। आज के समय में यह आदिवासी साहित्य हम और वे की दूरियों को पाटने का काम कर रहा है। यह साहित्य ने एक संवेदना जगाने का प्रयास किया और उसमें वह कामयाब भी हुआ है। इस साहित्य की यही सफलता है। दुर्गा भागवत, नागगौंड, सुदाम जाधव, इन्दूताई परूलेकर, अनुताई वाघ, दिनानाथ मनोहर, जगदीश गोडबोले, शरद पाटिल आदि साहित्यकार पर लेखन किया है। यह कहने में हर्ज नहीं कि आदिवासी लेखन विविधताओं से भरा हुआ है। मौखिक साहित्य की समृध्द परंपरा का लाभ आदिवासी रचनाकारों को मिला है। आदिवासी साहित्य की उस तरह की कोई केन्द्रिय विधा नहीं है, जिस तरह स्त्री साहित्य और दलित साहित्य की आत्मकथात्मक लेखन हैं। आदिवासी कलम की धार तेजी से अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार कर रही है। आदिवासी रचनाकारों का मूल साहित्य उनकी इन्ही भाषाओं में है। हिन्दी में मौजुद साहित्य देशज भाषाओं में उपस्थित साहित्य की इसी समृध्द परंपरा से प्रभावित है। कुछ साहित्य का अनुवाद और रूपांतरण भी हुआ है। भारत की तमाम आदिवासी भाषाओं में लिखा जा रहा साहित्य हिन्दी, बांग्ला, तमिल जैसी बडी भाषाओं में अनुदित और रूपांतरित होकर एक राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर रहा है। पूरा आदिवासी साहित्य उनके आंदोलनों से विद्रोही चेतना लेकर आगे बढ रहा है।

निष्कर्ष :-

जीवन के अनेक पहलुओं से रूबरू कराता आदिवासी लेखन, संघर्ष, उल्लास और आक्रामकता का साहित्य है। छल-कपट, भेदभाव, उँच-नीच से दूर तथा सामाजिक न्याय का पक्षधर इस साहित्य का आधार आदिवासियों की संस्कृति, भाषा-इतिहास, भूगोल तथा उनके जीवन की अनेक समस्याओं और प्रकृति के प्रति उनका गहरा लगाव है। यह साहित्य प्रासंगिक होने के साथ ही साथ, उपेक्षित समाज के प्रति संवेदना पैदाकर मानसिकता बदलने का प्रयास भी करता है।

संदर्भग्रंथ सूची :-

१. आदिवासी विद्रोह - ले. प्रमिला दीक्षित
२. बदलाव के लिए प्रतिबध्द आदिवासी साहित्य कथाक्रम अक्टूबर - दिसम्बर विशेषांक २०१२
३. राष्ट्र के रूप में भारत का गठन जनजातीय लोगों का एकीरण, सं उमाशंकर चौधरी
४. वाङ्मय त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका आदिवासी विशेषांक डॉ. एम. फीरोज अहमद
५. आदिवासी साहित्य यात्रा सम्पादक - रमणिका गुप्ता राधाकृष्ण प्रकाशन नई-दिल्ली

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com